PP-22-23

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

Open Or Transparent Peer Reviewed & Refereed Journal

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

शोध-ऋतु

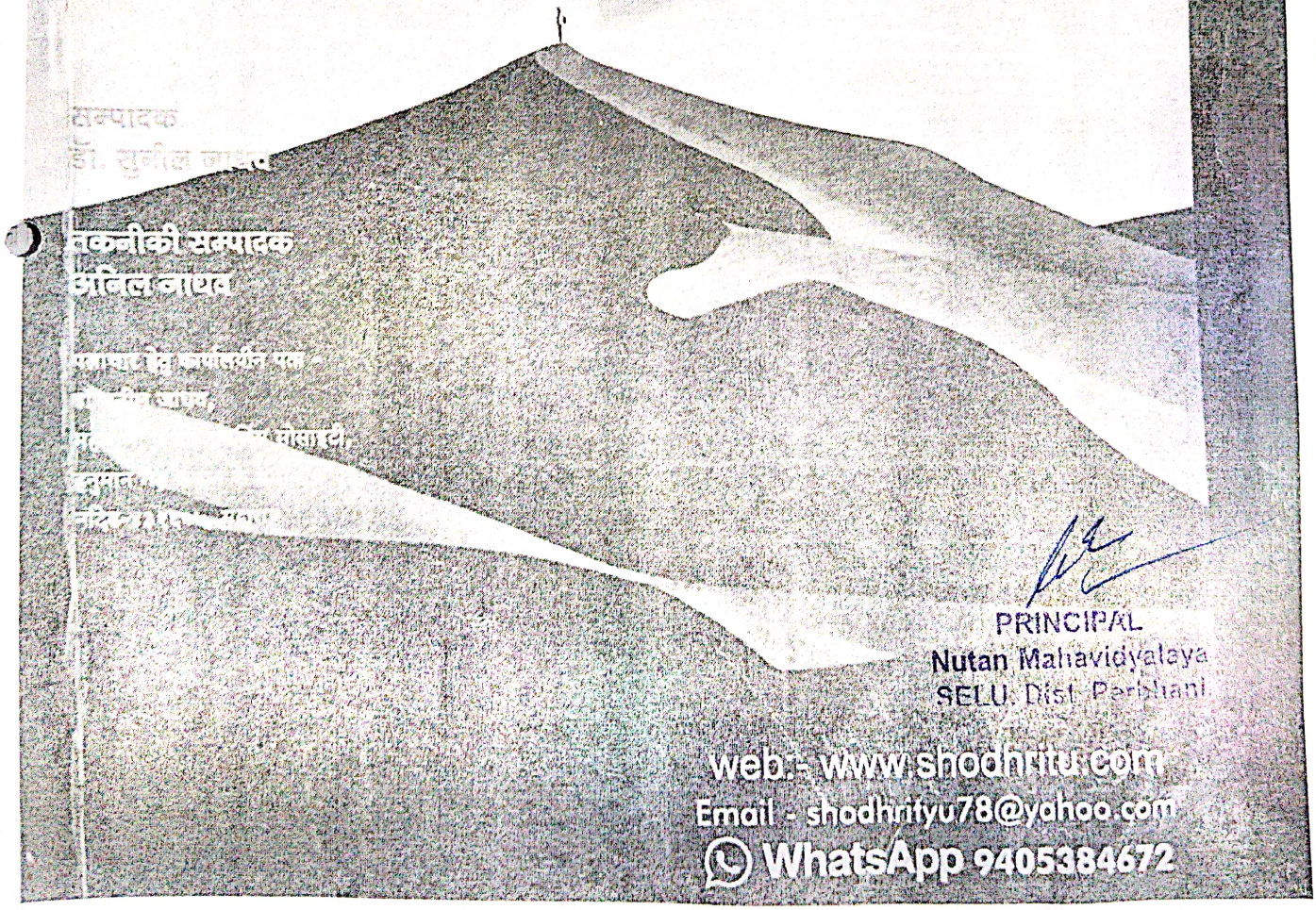

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

web :- www.shodhrityu.com
Email - shodhrityu78@yahoo.com
WhatsApp 9405384672

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

शोध-ऋतु

Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका

Open Transparent PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-30 **VOLUME-5** ISSN-2454-6283 **Oct.-Dec.**–2022

IMPACT FACTOR - **(IIJIF-8.014)**

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

सम्पादक
डॉ.सुनील जाधव ,नांदेड
9405384672

तकनीकी सम्पादक
अनिल जाधव, मुंबई

पत्राचार हेतु पता–
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी, हनुमान गढ़ कमान के सामने, नांदेड–431605

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist. Parbhani

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

अनुक्रमणिका

1.मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यास 'अल्मा कबूतरी' में वर्णित समाज : एक अध्ययन 6
–डॉ. [illegible] 6
2.भक्त कवि त्यागराज व तुलसीदास तथा दास्य–भक्ति पद्धति 8
–[illegible] सिंह 8
3.मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा कस्तूरी कुण्डल बसै में स्त्री विमर्श 11
–[illegible] देवी 11
4.महाभारत में गुरु परम्परा 13
–डॉ.मोहन सिंह देवदा 13
5.अनुवाद का महत्व 15
–डॉ.सविता बलभीम कावळे 15
6.एस0 आर0 हरनोट की कहानियों में पर्यावरणीय चेतना 17
–रीना देवी 17
7.नारी शिक्षा तथा नारी सशक्तीकरण 20
–डॉ0देवदत्त शुक्ला 20
8.डॉ.सूर्यबाला के कहानियों में चित्रित पारिवारिक समस्या 23
–प्रा.मजहर एम. कोतवाल 23
9.मुक्तिबोध की काव्य भाषा 26
–डॉ.विपिन गुप्ता 26
10.भारतीय साहित्य की मूलभूत एकता 28
–डॉ.छाया बाजपेई 28
11.तुलसीदास के काव्य में बिम्ब–विधान 30
–प्रियंका मिश्रा 30
12.कर्नाटक एकीकरण और सरदार वल्लभ भाई पटेल 33
–डॉ.दीपा रागा 33
13.साहित्य में दलित विमर्श का योगदान 35
–मोनिका 35
14.स्त्री प्रेम की दास्ताँ 'अन्या से अनन्या' का वास्तविक संदर्भ 38
–लक्ष्मी 38
15.स्वाधीनता पूर्व की हिंदी कहानियों में विवाहेतर संबंध 41
–कुसुम सबलानिया 41
16.दलित लेखिकाओं की कहानियों में मानवाधिकार 43
–मोनिका 43
17.दलित चेतना और समाजसुधारक 47

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

– [illegible] शर्मा 47
18 [illegible] प्रभाव का सही विमर्श 49
– डॉ [illegible] 49
19 दक्षिण एशिया के बदलते परिदृश्य में भारत की भूमिका : अवसर और चुनौतियाँ 52
– डॉ [illegible] 52
20 [illegible] समाज में अपराध : मिथक एवं यथार्थता 56
– डॉ दिलीप कुमार मीणा 56
21 [illegible] 58
– [illegible] ²डॉ पुष्पा दुबे 58
22 भारतीय कृषि पर जलवायु परिवर्तन प्रभाव का : एक अध्ययन 59
– डॉ [illegible] कुमार 59
23 दैहिक विकलांगता की समस्या से समाधान की ओर ले जाता उपन्यास : हॉफ मैन 61
– डॉ [illegible] 61
24 [illegible] शिक्षा दर्शन की विशेषताओं का वैश्विक शांति शिक्षा में योगदान 64
– [illegible] कुमार तिवारी 64
25 प्राथमिक विद्यालयों मे विद्यार्थियों के नामांकन पर मध्यान्ह भोजन योजना के प्रभाव का एक सूक्ष्म अध्ययन 67
– उमेश कुमार तिवारी 67
26 श्रीकृष्ण सरल के काव्य मे राष्ट्रीय चेतना 69
– ¹प्रदीप कुमार शर्मा, ²डॉ बृजेश धर दुबे 69
27 Dr.B.R.Ambedkar on Social Justice: An Overview 71
-*Prof. Ashok Kumar Rai* 71
28 Discourse On Essential Religious Practices In India: A Feminist Analysis Of Hizab Controversy 73
Shradha Baranwal 73
29 Role of Organisation climate in Secondary Schools Teachers Work place stress:A Review 75
-¹*Dr.Sushila Sharma*, ²*Parul* 75
30 Role Conflict with Professional Commitment, Work Motivation and Life Satisfaction. 78
-¹*Dr.Sushila Sharma*, ²*Nitin*. 78
31 CONCEPTUAL FREMWORK OF MICRO-FINANCE:NEW PROSPECTIVE 82
-*Dr.Kalesh Tiwari* 82

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU, Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

17 दलित चेतना और समाजसुधारक

–डॉ.अर्चना चंद्रकांत पत्की
हिंदी विभागाध्यक्ष, नूतन महाविद्यालय, सेलू

दलित शब्द का अर्थ है, जिसका दलन और दमन हुआ है, उत्पीडित, शोषित, सताया हुआ, गिराया हुआ, उपेक्षित, घृणित, रौंदा हुआ, मसला हुआ, कुचला हुआ, ...दीन, पस्त–हिम्मत, हतोत्साहित, वंचित आदि। 'दलित' ...व्यापक अर्थबोध की अभिव्यंजना देता है, भारतीय समाज में ...अस्पृश्य माना गया वह व्यक्ति ही दलित है। दुर्गम पहाडों, ...के बीच जीवनयापन करने के लिए बाध्य जनजातियाँ और ...सी जातियाँ सभी इस दायरे में आती है। सभी वर्गों की ...दलित है बहुत कम श्रम मूल्य पर चौबीसों घंटे काम ...वाले श्रमिक, बँधुआ मजदूर दलित श्रेणी में आते है। 'दलित' ...उस व्यक्ति के लिए प्रयोग होता है जो समाज व्यवस्था के ...सबसे निचली पायदान पर है। वर्ण व्यवस्था ने उसे अछूत ...अंत्यज श्रेणी में रखा। उसका दलन हुआ, शोषण हुआ, इस ...को ही संविधान में अनुसूचित जातियाँ कहा गया है। जो ...से ही अछूत है।'दलित' शब्द साहित्य के साथ जुडकर एक ...साहित्यिक धारा की ओर संकेत करता है, जो मानवीय ...अधिकारों और संवेदनाओं की यथार्थवादी अभिव्यक्ति है। अनेक ...विद्वानों ने 'दलित साहित्य' की व्याख्या करते हुए उसे परिभाषित ...किया है। दलित चिंतक कवल भारती की धारणा है कि, 'दलित साहित्य' से अभिप्राय उस साहित्य से है जिसमें दलितों ने स्वयं ...अपनी पीडा को रूपायित किया है, अपने जीवन–संघर्ष में दलितों ...ने जिस यथार्थ को भोगा है, दलित साहित्य उनकी उसी ...अभिव्यक्ति का साहित्य है। यह कला के लिए कला नहीं, बल्कि ...जीवन का और जीवन कि जीजिविषा का साहित्य है। महाभारत ...में कर्ण को कुंतीपुत्र अर्थात् पांडव होते हुए भी सूत पुत्र के रूप ...में माना गया तब 'रश्मिरथी' में 'राष्ट्रकवि' दिनकर ने कर्ण के ...लिए ये पंक्तियाँ कही थी–'मगर मनुज क्या करे? जन्म लेना तो ...उसके हाथ नहीं। / चुनना जाति और कुल अपनी वंश की तो बात नहीं।'

बेचारा कर्ण 'दलित' वेदना से प्रताडित था। किंतु हमें ...यह मानना पडेगा कि दलित भी एक मानव है। हमारा मंत्र 'वसुधैव कुटुम्बकम' का रहा है। हम प्रतिज्ञा भी लेते है कि "भारत मेरा देश है और सभी भारतीय मेरे भाई–बहन है।" हमें मानवीय ...संवेदना की प्रतितानुभूति का समन्वय करना चाहिए। आज ...दलित की परिभाषा बदल गई। तब कबीर का यह दोहा याद आये बिना नही रहता–'जाति न पूछो साधु की पूछ लीजिए ज्ञान। / मोल करो तलवार का पडा रहने दो म्यान।' भगवद्गीता में यह भी कहा गया है, 'यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।' जब भी हमारे समाज में अधर्म हुआ, उत्पीडन हुआ तब उसका निवारण किसी न किसी महापुरूषों के करकमलों से हुआ।अब हम उन दलितोध्दा के लिए जीवन समर्पित महामानवों का परिचय प्राप्त करने और उनसे कुछ आचरण करने पर बाध्य हो।

महात्मा ज्योतिबा फुले–जनवरी 1852 में दलित छात्रों के लिए स्कुल खोला। उन्होंने 'त्रिज्यारत्न' नामक नाटक की रचना की थी जिनमें कुछ पुरानी मान्यताओं का घोर विरोध किया गया। उनका व्यक्तित्व इतना प्रखर था कि उनकी हत्या करने गये वे खुद उनके शिष्य बनकर घर लौटे थे। उनके प्रसिद्ध ग्रंथ 'प्राईस्ट क्राफ्ट एक्स्पोरर्ड' 1869 में प्रकाशित हुआ, जिसमें सामाजिक रूढियों का विरोध प्रदर्शित है। 1889 में धर्म को विषय बनाकर 'सार्वजनिक धर्म' ग्रंथ दिया। किंतु वे केवल साहित्य द्वारा दलित चेतना को जगाना नहीं मानते थे। उन्होंने कई संस्थाएँ भी स्थापित की जैसे :– मानव धर्म सभा, परमहंस सभा, सत्यशोधक समाज आदि। फुले जी परंपराओं, रूढियों, जाति प्रथा, अंधश्रद्धा, सती प्रथा के कट्टर विरोधी थे। शूद्रों की शिक्षा और नारी चेतना के सदैव पक्षधर थे।

महात्मा गांधी :–महात्मा गांधी अपने समय के चोटी के राष्ट्रीय नेता थे। उन्होंने असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा और सन 1942 में भारत छोडो आंदोलन आदि प्रवृत्तियों के द्वारा भारतीय जनता में राष्ट्रीय शक्ति भर दी। उनकी रचनात्मक प्रवृत्तियों में 'अस्पृश्यता निवारण' भी शामिल था। उन्होंने अस्पृश्यता को हिंदू धर्म का कलंक कहा और अस्पृश्यों को 'हरिजन' नाम दिया। गांधी जी के दलित विषयक दृष्टिकोन और प्रवृत्तियों को दलितों के सुधारक एवं हितचिंतक होते हैं, तो कुछ गांधी जी की प्रवृत्तियों को राजनीतिक प्रवृत्तियाँ कहते हैं, कुछ लोग आंबेडकर और गांधी जी की तुलना करने का मिथ्या प्रयास करते है। यहाँ वह ख्याल रहे कि दोनों महापुरूष अपने–अपने क्षेत्र में महान ही थे। दोनों की सामाजिकता में फर्क था, दोनों की सोच में साम्य था फिर भी विषमताएँ भी थी। गांधी जी ने सिर्फ हरिजन उद्धार के लिए ऐसी योजनाएँ बनाई थी जा सवर्णो पर ही निर्भर करती थी। उन्होंने बार्डोली में भाषण दिया था उसमें यह बात दोहराई थी "केवल हरिजनों को अपनाना ही हिंदू धर्म का कर्तव्य नहीं है बल्कि उनके सुख–दुःख में सहभागी भी बनें।" 'यंग इंडिया' में उन्होंने कहा था, "यह मेरा पक्का इरादा है कि स्वराज प्राप्ति के पूर्व अस्पृश्यों की मुक्ति होनी चाहिए।" गाांधीजी की धर्म भावना पारलौकिक थी।

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

उनका मानना यह था कि मानव और सृष्टा के संबंध को जोड़नेवाला धागा धर्म है। उन्होंने 1932 में दलित उध्दार हेतु 'हरिजन सेवक संघ' की स्थापना की थी। गांधी जी के विचारों का साहित्यकारों पर भी प्रभाव रहा है। इसमें आ रामचंद्र शुक्ल जी ने 'अछूत की आह', श्री ब्रह्मदत्त दीक्षित कृत 'तुम स्वतंत्र हो मनुष्य', 'जाति रंग द्वेष में', श्रीमति सुभद्राकुमारी चौहान 'एक फूल की चाह', मैथिलीशरण गुप्त जी का 'महाभिनीष्क्रमण में अछूत', प्र. प्रेमप्रकाश वर्मा का 'अछूतोद्धार', 'हरिजन', श्री सोहनलाल द्विवेदी जी की 'हरिजनो के गीत', 'सेवाग्राम,' 'जीव साहित्य,' श्री हरिकृष्ण प्रेमी की 'हरिजन बंधु' श्री भगवतीचरण वर्मा की 'हिंदू' रचना उल्लेखनीय है। गद्य साहित्य आंदोलन का और गांधीवादी विचारों का गहरा प्रभाव है। प्रेमचंद की शुरूआत की कहानियाँ पूर्णतः गांधी विचारों से प्रेरित थी। जयशंकर प्रसाद जी ने भी दलित समस्याओं को अपना विषय बनाया था। गुजराती साहित्य मे भी गांधी जी का अधिकतम् प्रभाव रहा है। उमाशंकर जोशी, सुदरम्, पन्नालाल पटेल, मुन्नाभाई पंचोली आदि महत्त्वपूर्ण नाम लिये जा सकते है।

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर :–दलितों का मसीहा एवं बोधीसत्व बाबासाहब के पूर्व दलितों की स्थिति में अधिक सुधार नहीं था। किंतु बाबासाहब ने सामाजिक, राजकीय, आर्थिक सभी क्षेत्रों में परिवर्तन के आग्रही थे। बाबासाहब, महात्मा फुले को अपना आदर्श व गुरु समझते थे। बाबासाहब ने दलितों को उनकी दास्यता का बोध कराया और उनकी मुक्ति की स्पष्ट अवधारणा उनके समक्ष रखी। 1928 में महाड में अछूतों के लिए सार्वजनिक तालाब का पानी लेने हेतु सत्याग्रह किया। यह पहला अवसर था जब अछूतों की एक विशाल संख्या अपने मानव अधिकारों के लिए घरों से निकलकर सडकों पर आयी थी। यह दलित चेतना का प्रखर स्वरूप था। वैचारिक क्रांति के लिए उन्होंने 'मूकनायक' नामक पत्रिका शुरु की। 1927 में 'बहिष्कृत भारत' प्रसिद्ध की दलित छात्रवासी स्कूल खोला नागपूर सम्मेलन, पूना एक्ट, , गोलमेज परिषद आदि के द्वारा दलित चेतना और दलित उद्धार के कदम उठाये शिक्षित बनो संघर्ष करो !! संगठित रहो !!! बाबासाहब शिक्षा को अधिक महत्त्व देते थे। राजकीय क्षेत्र में दलितों को अधिकार प्राप्त हो इसलिए उन्होंने 'इंडिपेंडन्ट लेबर पार्ट की स्थापना की। उन्होंने बहिष्कृत समाज, 'शिक्षण प्रसारक मंडल,' 'शेड्युल कास्ट फेडरेशन' आदि की स्थापना करके दलित चेतना को जगाया। बाबासाहब के सामाजिक क्रांति का गहरा प्रभाव साहित्य पर। 1950 इ.स. में 'दलित साहित्य संघ' की स्थापना मराठी में हो चुकी थी। 1953 में 'जनता' साप्ताहिक पत्रिका में दलित साहित्य की सत्तालोचना पर बहस की थी। 19.. मे नागपूर में 'जयभीम' साप्ताहिक में 'दलित साहित्य में अना...' नामक एक लेख छापा था। इ.स. 1961 के बाद तो दलित साहि... का काफी विकास हुआ। इनके विचारों का प्रभाव मराठी साहि... पर सर्व प्रथम रहा है। बाबासाहब दलित साहित्य सृजक के ... संकल्पना और प्रतिबद्धता पर प्रकाश डालते रहे। मराठी साहि... इसी को ग्रहण कर विकसित हो रहा है। जिसमें महाराष्ट्र के ... गंगाधर पानतावणे, म. भि. चिटणीस, प्रेमानंद गजवी, दत्ता भग... संजय पवार, खुशाल कांबले, अविनाश डोळस, बाबूराव बागु... केशव मेश्राम, सुधाकर गायकवाड, शंकरराव खरात, नामदेव ढस... आदि ने मराठी साहित्य को समृद्ध किया। हिंदी दलित साहि... की धारा को तीन प्रभावों के अंतर्गत समझना उचित होगा–(1)आ... समाजी सृजक द्वारा दलित चेतना का स्वीकार औ... अविष्कार(2)महात्मा गांधी और गांधीवाद(3)डॉ. बाबासाह... आंबेडकर। हिंदी साहित्य में बाबासाहब कृत अंग्रेजी पुस्तकों ... चंद्रिका प्रसाद ने अनुवाद प्रकाशित किया। इन्हीं के प्रेरणा से ... भीमेनलाल, मोतीराम शास्त्री, मंगलदेव, गजाधर प्रसाद, नंदकिशो... माताप्रसाद, कमलभारती ने साहित्य सृजन किया। इसी समय ... स्वामी अछूतानंद और पेरियार रामास्वामी नायकर के विचारों ... काफी प्रभाव था। डॉ.बाबासाहब आंबेडकर द्वारा स्थापि... रिपब्लिकन पार्टी भी राजकीय क्षेत्र में सक्रीय प्रभाव डाले हुए थी।

महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ :–गुजरात के (बडौदा) ... महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ ने अपने जन–कल्याण औ... सुधारवादी कार्यक्रमों में दलितों को प्रोत्साहित किया। जाति भेद ... को स्थान नहीं दिया उनका दृष्टिकोन यह था कि नौकरियों ... सर्व जातियों को स्थान दिलाकर सभी को बुद्धिमत्ता और कर्तृ... का लाभ प्राप्त हो। 26 सितंबर, 1909 ई.स. एक स्कूल कार्यक्र... में अध्यक्ष के नाते इन्होंने मार्गदर्शन किया। जिस स्कूल का संचल... दलितों के हाथ में था। उस समय हिंदू शिक्षक अछूतों को पढा... से इन्कार कर देते थे, इस कारण अछूतों को पढ़ाने के लि... ख्रिश्चन और मुसलमान शिक्षकों की मदद लेनी पडती थी। उन्हों... दलितों के लिए शिक्षा, निवास व्यवस्था, द्रव्य साह्यता, नौकरी आदि सुविधाएँ देने पर जोर दिया। बड़ौदा से लेकर पालनपूर का क्षे... आज भी गायकवाड के प्रशासन को याद करता है डॉ.बाबासाहब को अमरिका पढ़ने के लिए शिष्यवृत्ती देकर गायकवाड ने ... भेजा। जगह–जगह पर अंत्येज पाठशालाओं का प्रारंभ कर... दलितों को उच्च स्थानों नौकरियों पर रखकर दलित समाज के हृदय में अपूर्व स्थान जमा दिया। ऐसे उदार दिल के राजदोते ... दलित कैसे भूल सकते हैं?

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

...वीर सावरकर :-बैरिस्टर सावरकर सामाजिक क्रांतिकारी थे। ...दलित नवसमाज निर्माण उनका दृष्टिकोन था। अस्पृश्यता के ... खिलाफ आवाज उठायी। विषमता, वर्णवर्चस्व, जातिभेद पर उन्होंने ... किये कहते थे कि अस्पृश्यता की रूढ़ि आत्मघातक है। ... ही बंधुओं को पशुओ से भी भिन्न समझना मनुष्य जाति का ... है। इसलिए मानवता की दृष्टि से अस्पृश्यता का उच्छेदन होना ... है। उन्होंने महाराष्ट्र में रत्नागिरी जिले में लेखन कार्य मंदिरों में ... दलितों के मंदिर प्रवेश आंदोलन का प्रचार एवं प्रसार भी ... । सावरकर के मतानुसार दलितोंध्दार के लिए धर्म परिवर्तन जाति ... की जरूरत नही, हिंदू रहकर ही यहीं उध्दार और जागरण ... है। 'जन्मजात अस्पृश्यता और जातिभेद को समूल उखाड़ने का ... उन्होंने प्रारंभ से उठाया है। हिंदू संगठन का वह एक अनिवार्य ... है। सावरकर हिंदुत्व के घेरे को उल्लंघित न करते हुए दलितोध्दार ... संभावना मानते थे।' इन सभी समाज सुधारकों के कारण दलित ... ने शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक सुपरिणाम ... संवैधानिक अधिकारों से होने लगे। आज सभी क्षेत्रों में थोड़ा बहुत ... दलित समाज दिखायी देता है। उन्होंने केवल इन क्षेत्रों में जागृति लाने ... कोशिश नहीं की, बल्कि संविधान का निर्माण करके दलित ... अत्याचारों के खिलाफ कानून बनाया। इसमें आज भी केवल थोड़ा बहुत परिवर्तन हुआ है। दलितों को उपर उठाने के लिए केवल कानुन समर्थ नहीं होगा बल्कि उनके साथ प्रत्यक्ष उनकी संहायता करने और उध्दार ... सुविधाएँ उपलब्ध कर देने की जरूरत होगी।असल में सोचा जाए ... वर्तमान भारत में दलितों में आयी जागृति के उन्मेषकर्ता ये महापुरूष ... हैं। इन सभी ने भले ही अपने-अपने दृष्टिकोन और तरीके से इस दिशा और क्षेत्र में कार्य किया। इन प्रणेताओं को दार्शनिक, बौध्दिक ... और क्रांतिकारी कहना होगा। यह दीर्घकाल चलनेवाली ... प्रक्रिया है। दलित समाज क्षमता प्राप्त करके से मुक्ति प्राप्त नहीं कर लेता तब तक कोई परिर्वतन संभव नहीं। परिवर्तन की बात ... दशा में सुधार अपेक्षित है। इस आंदोलन में सामाजिक परिवर्तन ... स्थान पर सामाजिक रूपांतरण का सपना निहित है। इन समाज सुधारकों ने हजारों साल से मूक बने जनमानस को वाणी दी है। किंतु ... हमें सोचना होगा कि, इन समाज सुधारकों के कार्यों को पालन कितनी निष्ठा के साथ किया जा रहा है?

इस सत्य को तो मानना ही पड़ेगा कि अब तक दुनिया में ... भी विराट परिवर्तन हुये, इन समाज सुधारकों के कारण ही। किंतु हम अपने आप से ही यह प्रश्न पुछे कि क्या इनके विचार, इनका ... आज भी बहुत से प्रश्नों के उत्तर दे रहे हैं? या आगामी कोई ... समाज सुधारकों के विचार और लेखन से दलित समाज के सारे ... हल हो जायेंगे? हम केवल यही आशा कर सकते है कि दलित समाज के लिए आनेवाला कल बेहतर जिंदगी लाए। उनका भविष्य ... उज्जवल एवं समृध्द हों।

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner

NUTAN MAHAVIDYALAYA SELU

हिंदी साहित्य और समाज

संपादक

प्रा. डॉ. संतोष विजय येरावार

प्रा. डॉ. व्यंकट अमृतराव खंदकुरे

PRINCIPAL
Nutan Mahavidyalaya
SELU. Dist. Parbhani

Scanned with OKEN Scanner